IJAER/ November-December 2023/Volume-12/Issue-6 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

भारतेंदु युगीन निबंधकारों में राष्ट्रभक्ति की भावना।

दीक्षा राय

शोध छात्रा हिंदी विभाग

विश्व भारती शांतिनिकेतन

वेस्ट बंगाल

सार :

हिन्दी निबन्ध का जन्म भारतेन्दु-काल में हुआ। यह नवजागरण का समय था। भारतीयों की दीन-दुखी दशा की ओर लेखकों का बहुत ध्यान था। पुराने गौरव, मान, ज्ञान, बल-वैभव को फिर लाने का प्रयत्न हो रहा था। लेखक अपनी भाषा को भी हर प्रकार से सम्पन्न और उन्नत करने में लग गए थे, और सबसे बड़ी बात यह थी कि इस काल के लेखक स्वतंत्र विचारों के थे। उनमें अक्खड़पन और फक्कड़पन भी था। ऐसा युग निबन्ध के बहुत अनुकूल होता है, इसलिए इस युग में जितने अच्छे निबन्ध लिखे गये उतने अच्छे नाटक, आलोचना, कहानी आदि नहीं लिखे गए।

मुख्यशब्द : राष्ट्रभक्ति , हिन्दी साहित्य , भारतेन्दु काल

प्रस्तावना

हिन्दी साहित्य के इतिहास में आधुनिक काल के प्रथम चरण को ष्भारतेन्दु युग की संज्ञा प्रदान की गई है और भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को हिन्दी साहित्य के आधुनिक युग का प्रतिनिधि माना जाता है। भारतेन्दु का व्यकितत्व प्रभावशाली थाए वे सम्पादक और संगठनकर्ता थेए वे साहित्यकारों के नेता और समाज को दिशा देने वाले सुधारवादी विचारक थेए उनके आसपास तरुण और उत्साही साहित्यकारों की पूरी जमात तैयार हुईए अतः इस युग को भारतेन्दु.युग की संज्ञा देना उचित है। डा लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय ने लिखा है कि श्प्राचीन से नवीन के संक्रमण काल में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र भारतवासियों की नवोदित आकांक्षाओं और राष्ट्रीयता के प्रतीक थेय वे भारतीय नवोत्थान के अग्रदूत थे।

जिस समय खड़ी बोली गद्य अपने प्रारिम्भक रूप में थीए उस समय हिन्दी के सौभाग्य से भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने साहित्य के क्षेत्र में प्रवेश किया। उन्होंने राजा शिवप्रसाद तथा राजा लक्ष्मण सिंह की आपस में विरोधी शैलियों में समन्वय स्थापित किया और मध्यम मार्ग अपनाया।

इस काल में हिन्दी के प्रचार में जिन पत्र.पत्रिकाओं ने विशेष योग दियाए उनमें उदन्त मार्तण्डए कवि वचन सुधाए हरिश्चन्द्र मैगजीन अग्रणी हैं। इस समय हिन्दी गद्य की सर्वांगीण प्रगति हुई और उसमें उपन्यासए कहानीए नाटकए निबन्धए आलोचनाए जीवनी आदि विधाओं में अनूदित तथा मौलिक रचनाएं लिखी गयीं।

भारतेन्दु युग

भारतेन्दु काल के वातावरण और परिस्थितियों से तो आप परिचित ही है। उस युग में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, बालकृष्ण भट्ट, प्रतापनारायण मिश्र, बदरी नारायण चौधरी 'प्रेमधन', बालमुकुन्द गुप्त, राधाचरण गोस्वामी जैसे प्रमुख निबन्धकार हुए।

भारतेन्दु जीके निबन्ध भी अनेक विषयों पर हैं। 'काश्मीर कुसुम' 'उदयपुरोदय', 'कालचक्र', 'बादशाह दर्पण'-ऐतिहासिक, 'वैद्यनाथ धाम', 'हरिद्वार', सरयू पार की यात्रा' : विवरणात्मक, 'कंकण स्तोत्र' : व्यंग्यपूर्ण वर्णनात्मक और 'नाटक', 'वैष्णवता और भारतवर्ष' विचारात्मक निबन्ध हैं। भारतेन्दु सबसे अधिक सफल हुए अपने व्यंगात्मक निबन्धों में। 'लेवी प्राणलेवी', 'स्वर्ग में विचार-सभा का अधिवेशन', 'पाँचवें पैगम्बर', 'अंग्रेज स्त्रोत', कंकड़ स्तोत्र' आदि में गजब का हास्य-व्यंग्य है ही 'सरयू पार की यात्रा' में भी भारतेन्दु अपने व्यंग्य का बढ़िया नमूना उपस्थित करते हैं। जैसे : वाह रे बस्ती। झक मारने बसती है। अगर बस्ती इसी को कहते हैं, तो उजाड़ किसे कहेंगे?

इनके निबन्धों की भाषा स्वच्छ और श्लेषपूर्ण है। कहीं-कहीं तो उर्दू की बढ़िया शैली भी आपने उपस्थित की। भाव और विचार की दृष्टि से युग की वे सभी विशेषताएं इनमें भी हैं जो भट्ट जी या प्रतापनारायण मिश्र में हैं।

बालकृष्ण भट्ट अपने समय के सर्वश्रेष्ठ निबन्धकार कहला सकते हैं। इन्हें हिन्दी का 'मान्तेन, कहा जाता है। भट्ट जी ने सभी प्रकार के निबन्ध लिखे। 'मेला-ठेला', 'वकील' : वर्णनात्मक, 'आंसू', 'चन्द्रोदय', 'सहानुभूति', 'आशा माधुर्य', 'खटका' : भावात्मक 'आत्म-निर्भरता', 'कल्पना-शक्ति', 'तर्क', और 'विश्वास' : विचारात्मक निबन्ध हैं। 'खटका', 'इंगलिस पढ़े तो बाबू होय', 'रोटी तो कमा खाय किसी भांति', 'मुछन्दर', 'अकल अजीरन राग' आदि निबन्धों में मस्ती, हास-परिहास, विनोद-व्यंग्य सभी कुछ हैं। ऐसे निबन्धों की भाषा चलती और दैनिक व्यवहार की है। भट्ट जी की भाषा विषय के अनुकूल और अपने समय में सबसे अधिक मंजी हुई सबल और प्रभावशाली है। समाज, व्यक्ति, जीवन, धर्म, दर्शन, राष्ट्र, हिन्दी : सभी विषयों पर आपने लिखा। जन-साहित्य को जन-भाषा में लिखने वालों में प्रतापनारायण मिश्रका नाम सर्वप्रथम आएगा। इनके व्यक्तित्व और निबन्धों में निराला आकर्षण है। लापरवाही, चुभता व्यंग्य, गुदगुदीभरा विनोद इनकी रचनाओं की विशेषताएँ हैं। इस युग में इतनी चुलबुली भाषा लिखने वाला और कोई नहीं हुआ। यह 'ब्राह्मण' नामक पत्र निकालते थे, जिसमें इनके निबन्ध छपते थे। छोटे-छोटे विषयों पर इतने बढ़िया, मनोरंजन और उच्च उद्देश्य को लेकर किसी लेखक ने नहीं लिखा। 'नाक', 'भौह', 'वृद्ध', 'दांत', 'पेट', 'मृच्छ' आदि विषयों को लेकर आपने अपने निबन्धों में मनोरंजन का सामान भी जुटाया और देश-प्रेम, समाज-सुधार, हिन्दी के प्रति प्रेम, स्वाभिमान, आत्म-गौरव का सन्देश भी दिया। इनकी शैली में घरेलू बोलचाल की शब्दावली तथा पूर्वी बोलियों की कहावतों और मुहावरों का प्रयोग मिलता है। लापरवाही के कारण भाषा की अशुद्धयाँ रहना साधारण बात है। 'आत्मीयता', 'चिन्ता', 'मनोयोग' इनके विचारात्मक निबन्ध हैं।

प्रेमघन जी अपने निरालेपन के लिए याद किए जाते हैं। उनका उद्देश्य यह नहीं था कि उनकी बात साधारण समाज तक पहुंचे, उसका मनोरंजन हो या उसके विचारों में परिवर्तन हो। कलम की करामात दिखाना ही उनका उद्देश्य था। वह स्वाभाविक, प्रवाहमय, सुबोध भाषा नहीं लिखते। बल्कि शब्दों की जड़ाई करते थे। भाषा बनावटी होते हुए भी उसमें कहीं-कहीं विवेचन की शक्ति पायी जाती है। आप 'नागरी नीरद' और 'आनन्द कादम्बिनी' नामक पत्र निकालते थे। इन्हीं में उनके निबन्ध छपा करते थे। इनके शीर्षक उनकी भाषा-शैली को प्रकट करते हैं जैसे सम्पादकीय, सम्पत्ति सीर, हास्य, हरितांकुर, विज्ञापन और वीर बधूटियां। 'हमारी मसहरी' और 'हमारी दिनचर्या' जैसे मनोरंजक लेख उन्हीं के लिखे हुए हैं। 'फागुन', 'मित्र', 'Rतु-वर्णन उनके अच्छे निबन्ध हैं।

बावमुकुन्द गुप्त इस युग के अन्तिम और सबसे अधिक महत्वपूर्ण निबन्धकार थे। 'शिवशम्भू' के नाम से 'भारतमित्र' में वह 'शिवसम्भू' का चिट्ठा' लिखा करते थे। हास्य-व्यंग्य के बहाने 'शिवशम्भू का चिट्ठा नाम से पुस्तक रूप में प्रकाशित हुए। उनका व्यंग्य शिष्ट और

नागरिक होता था। भाषा मिली-जुली हिन्दी-उर्दू। राधाचरण गोस्वामीको भी इस युग के प्रगतिशील लेखकों में गिना जाएगा। 'यमपुर की यात्रा' में उन्होंने धार्मिक अंधविश्वास का बहुत मजाक उड़ाया है। धार्मिक विचारों के लोग गाय की पूंछ पकड़कर वैतरणी पार करते हैं। इसमें कुत्ते के पूंछ पकड़कर वैतरणी पार कराई गई है। पहले ऐसी बात सोचना घोर पाप समझा जा सकता था।

भारतेन्दु-काल के निबन्धकारों की विशेषताएँ हैं : निबन्धों के विषयों की विविधता, व्याकरण-सम्बन्धी लापरवाही और अशुद्धयां, देशज या स्थानीय शब्दों का प्रयोग, शैली के विविध रूप और विचार-स्वतन्त्रता, समाज-सुधार, देश-भक्ति, पराधीनता के प्रति रोष आत्म-पतन पर खेद, देशोत्थान की कामना, हिन्दी-सम्मान की रक्षाभावना, हिन्दू, पर्व-त्यौहारों के लिए उत्साह और नवीन विचारों का स्वागत। निबन्ध की एक विशेष शैली भी इस युग की विशेषता है : 'राजा भोज का सपना' (शिवप्रसाद सितारे हिन्द), एक अद्‌भुत अपूर्व स्वप्न (भारतेन्दु) एक अनोखा स्वप्न (बालकृष्ण भट्ट), यमपुर की यात्रा (राधाप्रसाद गोस्वामी) : इन रचनाओं में स्वप्न के बहाने राजनैतिक अधिकार पाने, समाज सुधार तथा धर्म-संस्कार का संदेश दिया गया है।

हिन्दी कविता के लिए श्नवीन जागरणश् के संदेशवाहक के रूप में प्रस्फुटित भारतेन्दु.युग सामान्यतः 1857 ईण् के विद्रोह से लेकर 1900 ईण् में श्सरस्वतीश् पत्रिका के प्रकाशन वर्ष तक माना जाता हैण् दो संस्कृतियों की टकराहट के इस काल का रचनाकार पहली बार साहित्य को श्संतों की कुटियाश् तथा श्सामंतों की चित्रशालाश् से निकालकर यथार्थ जीवन के खुले मैदान में प्रस्तुत करता हैण् इसलिए भारतीय नवजागरण की कोख से उपजी राष्ट्रीय.चेतना की सशक्त अभिव्यक्ति इस युग के साहित्य में हुई है ण् भारतेन्दुयुगीन साहित्य की विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है. ष्भारतेन्दु का पूर्ववर्ती साहित्य संतों की कुटिया से निकलकर राजाओं और रईसों के दरबार में पहुँच गया था ण् वह मनुष्य को देवता बनाने के पवित्र आसन से च्युत होकर मनोविनोद का साधन हो गया था ऐसा होना वांछनीय नहीं था जिन संतों और महात्माओं ने काव्य में मनुष्य को देवता बनाने की शक्ति संचारित की थीए उनके चेलों ने उनके नाम पर सम्प्रदाय स्थापित किएए काव्य को देवता बनाने की शक्ति लुप्त हो गईण् उनकी सांप्रदायिकए अद्‌भुत व्याख्याएं शुरु हो गई और दूसरी ओर कवियों की दुनिया राजदरबारों की ओर खिंच गई ण् भारतेन्दु ने कविता को इन दोनों ही प्रकार की अधोगातियों के पंथ से उबाराण् उन्होंने एक तरफ तो काव्य को फिर से भक्ति की पवित्र मंदाकिनी में स्नान कराया और दूसरी तरफ उसे दरबारीपन से निकालकर लोकजीवन के आमने.सामने खड़ा कर दियाण् नाटकों में तो उन्होंने युगांतर उपस्थित कर दिया ण्ष्1 स्पष्ट है कि भारतेन्दुयुगीन हिन्दी काव्य ने साहित्य को मनोविनोद के बदले राष्ट्रीयता एवं लोक जीवन से जोड़कर उसे सामाजिक परिवर्तन का माध्यम प्रस्तावित कियाण् इतना ही नहीं जिस सामाजिक इकाई में नवजागरण के कार्य संपन्न होते है उसे विद्वानों ने श्जातिश् की संज्ञा प्रदान की हैण् हम जानते हैं कि अंग्रेज.पूर्व भारतीय समाज का निर्माण अनेक जातियों ;हिन्दीए बांग्लाए तमिल आदि द्ध अनेक भाषाओंए वर्ग और संस्कृतियों के मिश्रण से हुआ थाण् इनमें स्थानीय आबादी के अलावा बहार से आने वाली जातियाँ ;तुर्कए पठानए फ़ारसी इत्यादिद्ध भी शामिल थीण् रामविलास शर्मा ने इस पूरे सन्दर्भ को ध्यान में रखकर ही भारतेन्दु युग को हिन्दी जाति का निर्माण काल मानते हुए इसे नवजागरण कालश् की संज्ञा प्रदान की है।

नवजागरण पूरी परंपरा और संस्कृति को वैज्ञानिक तर्क.विधान एवं सामाजिक.राजनैतिक अभिप्राय से जोड़नेवाली चेतना है ण् इसलिए आधुनिक भावबोध की संगठित अभिव्यक्ति नवजागरण के माध्यम से हुई है प्रसिद्ध इतिहासकार बिपिन चन्द्र लिखते है. ष्ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विस्तार और उसके साथ औपनिवेशिक संस्कृति और विचारधारा के प्रचार.प्रसार की प्रतिक्रिया में ही यह लहर उठनी शुरु हुई थी ण् बाहरी संस्कृति के फैलाव से भारतीयों के लिए

यह जरुरी हो गया था कि वह आत्म.निरीक्षण करेण् ण् हालाँकि औपनिवेशिक संस्कृति के खिलाफ यह प्रतिक्रिया हर जगह और हर समाज में अलग.अलग तरह की हुईए लेकिन यह बात हर जगह शिद्दत के साथ महसूस की गई कि सामाजिक धार्मिक जीवन में सुधार अब जरुरी हो गया हैण् सुधार की इस प्रक्रिया को आमतौर पर नवजागरण कहा जाता है ष्2 ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में भी देखें तो 1857 पूँजीवाद और साम्राज्यवाद बनाम सामंतवाद के मुठभेड़ का काल हैण् सामंतवाद और पूँजीवाद के इस मुठभेड़ में सामंतवाद की पराजय होती है। और पूँजीवादी व्यवस्था का प्रस्थान बिंदु होने के कारण 1857 आधुनिक काल का प्रस्थान बिंदु मान लिया जाता है बिपिन चन्द्र लिखते हैं. ष्भारत में ब्रिटिश राज की स्थापना भी एक घटना नहीं थीए बल्कि यह भारतीय अर्थव्यवस्था और समाज के औपनिवेशीकरण और धीरे-धीरे दबाए रहने की लम्बी प्रक्रिया का नतीजा थी. इस प्रक्रिया ने हर स्तर पर भारतीय समाज में असंतोष और क्षोभ को जन्म दिया था " इन्हीं सब कारणों से विद्वानों का एक वर्ग नवजागरण को जहाँ पश्चिम के परिणामस्वरूप मानते हुए इस बात पर जोर देते हैं कि पश्चिम का ज्ञान-विज्ञान, उसके चिंतन एवं तर्क प्रणाली से जब हिन्दुस्तानी समाज अवगत हुआ तो उन्होंने अंधविश्वास और यथास्थितिवाद में डूबे समाज को बाहर निकालने की कोशिश की. वहीं दूसरा वर्ग इसे दो संस्कृतियों (पूरब और पश्चिम) को टकराहट का परिणाम मानता है नवजागरण की ऐतिहासिक व्याख्याताओं के कुछ ऐसे भी प्रवक्ता हैं जो 1857 के क्रांति की उपेक्षा कर धार्मिक आन्दोलनों अथवा आर्य समाज जैसे संगठनों को ही नवजागरण का वाहक सिद्ध करने की कोशिश करते हैं. परन्तु ऐतिहासिक एवं सामाजिक परिस्थितियों के हवाले से देखें तो भारतेन्दुयुगीन हिन्दी नवजागरण 1857 के आन्दोलन स्वरूप उत्पन्न हुआ. इसमें एक ओर अ धार्मिक एवं सामाजिक आन्दोलनों का प्रभाव था तो दूसरी ओर पूँजीवाद एवं सामंतवाद की टकराहट. इन दोनों के संघर्षपूर्ण द्वंद्व के टकराहट से ही हिन्दी नवजागरण एवं भारतेन्दु-युगीन हिन्दी साहित्य दोनों का विकास होता है

भारतेन्दु युग मुख्यतः दो संस्कृतियों की टकराहट का काल है जिसमें “एक ओर मध्ययुगीन दरबारी संस्कृति विद्यमान थी तो दूसरी ओर आम जनता में सामाजिक और राजनीतिक आन्दोलन के लिए वातावरण भी तैयार करना था. साहित्य में, देश में बढ़ते असंतोष को प्रकट करना भर ना था अपितु सदियों से चले आते समाज की हड्डियों में बसे हुए सामंती विकारों से भी मोर्चा लेना था . " इसलिए अंग्रेजी राज्य के स्वरूप की पहचान एवं राष्ट्रीय स्वाधीनता के उद्देश्य के साथ-साथ भारतेन्दुयुगीन नवजागरण के मूलतत्व में सामंतवाद एवं साम्राज्यवाद विरोधी दृष्टि, जनसंस्कृति से लगाव, राष्ट्रीयता की अवधारणा का सूत्रपात साहित्य को सामाजिक परिवर्तन का अस्त्र समझना तथा अध्यात्म एवं रहस्य का विरोध विद्यमान है

भारतेन्दुयुगीन कविता अंतर्विरोधी मूल्यों से ग्रस्त साहित्य की कविता है जो सामाजिक संरचना के भीतर से आया है. तत्कालीन परिस्थितियों में भारत जहाँ परतंत्र था वहीं साहित्यिक स्तर पर ब्रजभाषा की काव्य- परंपरा अपने चरम पर विद्यमान थी. यद्यपि काव्य-रचना में भारतेन्दु युग परंपरा को स्थान देता है परन्तु धीरे- धीरे परंपरा का स्थान नवीनता ले लेता है. भारतेन्दु ने जहाँ 'चिर जीवो विक्टोरिया रानी' लिखी वहीं राधाचरण गोस्वामी ने 'हमारो उत्तम भारत देश' कविता लिखकर राष्ट्रीय गौरव को जाग्रत किया यही अंतर्विरोध इस साहित्य में अनेकी स्तरों पर फलीभूत हुआ है जैसे राजभक्ति- राष्ट्रभक्ति, परम्परा- नवीनता भक्ति-शृंगार बनाम जन-समस्या तथा बृजभाषा बनाम खड़ी बोली का अंतर्विरोध. है

उदा. - "भीतर भीतर सब रस चूसै, हँसि हँसि के तन मन धन मूस .

जाहिर बातन में अति तेज, क्यों सखि सज्जन नहिं अंग्रेज "

1878 ई. तक राष्ट्र-प्रेम संबंधी काव्य के प्रकाशन में वृद्धि देखकर अंग्रेज सरकार ने 'वर्नाकुलर प्रेस एक्ट' पारित करके एक प्रकार से साहित्य - प्रकाशन पर पाबंदी लगा दी थी. देश व्यापी विद्रोह होने के कारण 1882 में इस एक्ट को रद्द कर दिया गया लेकिन

1878 ई. में ही भारतीय शस्त्र एक्ट बनाया गया जिसके द्वारा भारतीयों को शस्त्र रखने की आजादी ख़त्म कर दी गई. इसलिए भारतेन्दु समेत लगभग सभी रचनाकारों ने इस भेदभाव पूर्ण, नीति के विरुद्ध कविताएँ लिखी स्वयं भारतेन्दु बार-बार प्रजा से अधिक टैक्स वसूलने, विदेशी वस्तुओं के आयात के कारण देश की बढ़ती निर्धनता पर क्षोभ प्रकट करते हैं. यथा-

"अंग्रेज राज सुख साज सजै सब भारी .

पै धन विदेस चलि जात इहै अति ख्वारी "

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में देखें तो 1874-75 तक की रचनाओं में भारतेन्दु समेत सभी साहित्यकार अंग्रेजी सरकार को न्याय, धर्म तथा दया का अवतार बताते रहे परन्तु विक्टोरिया की घोषणा के बाद भी जब देश की स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ तो उनके मन में क्षोभ पैदा हुआ. उन्हें सहज ज्ञात हो गया कि कोरी राजभक्ति से अब काम नहीं चलेगा इसलिए अंग्रेजी शासन की आलोचना, अतीत पर गर्व, वर्तमान पर क्षोभ के माध्यम से उन्होंने राष्ट्रीयता की अवधारणा का सूत्रपात किया यही वह बिन्दु है जो आधुनिक काल को मध्यकाल से अलगाता है तथा अस्मिता की रक्षा के लिए प्रेरित भी करता है इसी सन्दर्भ में भारतनाथ की कल्पना स्वप्न की काल्पनिक परिकल्पना को तोड़कर सुसुप्त भारतीय मानसिकता को जागृत करने के लिए किया गया है -

डूबत भारतनाथ जागो बे जागो अब

आलस दव एहि दहन हेतु चाहुँ दिसि सो लागो .."

परम्परागत काव्य में जो 'राधानाथ' बनकर केवल नायिकाओं से छेड़छाड़ करते रहे उन्हें भारतनाथ बनाने के प्रेरणा भारतेन्दु की नवजागरण एवं पराधीनता के प्रति छटपटाहट एवं तीव्र आक्रोश को व्यक्त करता है. साथ ही मध्यकालीनता एवं आधुनिकता के अन्तर्द्वन्द्व को भी 'जागो' के द्वारा स्पष्ट किया गया है. ईश्वरीय शक्ति में आस्था जहाँ मध्ययुगीन वृत्ति है वहीं देश के प्रति आस्था आधुनिक भावबोध का सूचक है . रामविलास शर्मा लिखते हैं- "तुलसीदास ने भक्ति के रूप में भारतीय जनता में जो सहज आत्मसम्मान जगाया था वही नई परिस्थितियों में भारतेन्दु के राष्ट्रीय आत्मसम्मान के रूप में विकसित हुआ ." भारतेन्दु युग के दूसरे बड़े लेखक बालकृष्ण भट्ट भी राष्ट्रीयता की भावना के प्रसार को सबसे बड़ा धर्म मानते हुए लिखते हैं- "जिस काम को करने से नेशनलिटी हमारे में आवे हमको अपनी स्वत्व रक्षा का ज्ञान हो वही मूल धर्म है ."

भारतेन्दु युग की सामाजिक स्थिति एवं साहित्यिक मान्यताओं पर विचार करें तो देश से लेकर विचार तक विदेशी अर्थात् अंग्रेजों के प्रभाव में था. साहित्य बहुत हद तक मन बहलाव या पांडित्य प्रदर्शन का माध्यम भर था इससे किसी प्रकार के परिवर्तन की आशा नहीं की जा सकती थी इसलिए यह आवश्यक था कि लोगों के बीच स्वदेशी का भाव जगाया जाए जिसे प्रसारित करने का काम भारतेन्दु युगीन रचनाकारों ने किया इसलिए रामस्वरूप चतुर्वेदी ने कहा है कि "स्वदेशी की भावना और राष्ट्र की धर्म-निरपेक्ष परिकल्पना में भारतेन्दु का चिंतन अग्रगामी कहा जाएगा. वे इस प्रसंग में आधुनिक संविधान को बहुत पहले से पूर्वाशित करते दिखाई देते हैं "7 रामविलास शर्मा ने भी लिखा है- "हिन्दी भाषी जनता इस बात पर गर्व कर सकती है कि उसके नवजागरण के वैतालिक हरिश्चंद ने 24 वर्ष की अवस्था में स्वदेशी के व्यवहार की एक गंभीर प्रतिज्ञा की थी. उस दिन तरुण हरिश्चंद्र ने न केवल हिन्दी प्रदेश के लिए वरन् समूचे भारत के लिए एक नए युग का द्वार खोल दिया उस दिन राष्ट्रीय स्वाधीनता के पावन उद्देश्य से हिन्दी साहित्य का अटूट गठबंधन हो गया था उस दिन

था हरिश्चंद्र की कलम से भारतीय जनता ने अंग्रेजी राज्य के नाश का वारंट लिख दिया था ." महात्मा गाँधी के नेतृत्व में जो स्वदेशी आन्दोलन चला था वह अपने प्रारम्भिक रूप में भारतेंदु युग में प्रारंभ होकर अंग्रेजी शासन के नाश का वारंट जारी कर चुका था. उदा.-

" अपना बोया आप ही खावै, अपना कपड़ा आप बनावै.

माल विदेशी दूर भगावै, अपना चरखा आप चलावै .."

उपसंहार

हिंदी की आधुनिकता की शुरुआत भारतेंदु युग से ही होती है। आधुनिक काल में प्रेस की स्थापना से ही हिंदी में आधुनिकता आई फलस्वरूप प्रकाशन की सुविधा हुई जिससे हिंदी गद्य के विभिन्न रूप उपन्यास नाटक कहानी इत्यादि विकसित हुए और उनके छपने के लिए पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन हुआ क्योंकि हिंदी साहित्य के भारतेंदु युग के प्रत्येक साहित्यकार पत्रकार भी थे "इसीलिए भारतीय युगीन लेखक संवेदनात्मक स्तर पर परस्पर बहुत निकट रहे हैं। इन लेखकों की व्यक्तिगत रचनात्मक उपलब्धि समान स्तर की नहीं है पर एक वृत्त के रूप में उनका योगदान अपने में विशिष्ट है"। अतः भारतेंदु युग वह संधि स्थल है जहां प्राचीन मान्यताएं आधुनिक सामाजिक प्रवृत्तियों में विलीन होती हैं।

सन्दर्भ :

1. हजारी प्रसाद द्विवेदी- हिन्दी साहित्य: उद्भव और विकास, राजकमल प्रकाशन संस्करण 2015,
2. बिपिन चन्द्र- भारत का स्वतंत्रता संघर्ष, हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली संस्करण 2018
3. रामविलास शर्मा - भारतेन्दु युग और हिन्दी भाषा की विकास- परम्परा, राजकमल प्रकाशन
4. बालकृष्ण भट्ट निबंध संग्रह- उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान,
5. रामस्वरूप चतुर्वेदी - हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास, लोकभारती प्रकाशन, संस्करण 2014
6. रामविलास शर्मा - भारतेन्दु और हिन्दी नवजागरण की समस्याएँ, राजकमल प्रकाशन दिल्ली, संस्करण 2015
7. रामचंद्र शुक्ल - हिन्दी साहित्य का इतिहास, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, संस्करण 2016,
8. देखें, वीर भारत तलवार रस्साकशी, सारांश प्रकाशन, दिल्ली, हैदराबाद
9. शिवदान सिंह चौहान - हिन्दी साहित्य का अस्सी बरस (सं. विष्णुचंद्र शर्मा) स्वराज प्रकाशन, संस्करण 2017
10. आलोचना- नामवर सिंह (संपादक), अंक -जनवरी-मार्च 2018
11. रामविलास शर्मा - परंपरा का मूल्यांकन, राजकमल प्रकाशन, संस्करण 2017